

“गुण-अवगुण”



बबली-दिल्ली

हम यहाँ खेल देखने आए हैं और-हमारा शरीर पांच तत्व का है-इसमें गुण-अवगुण दोनों ही शामिल हैं-किसी के गुण-अवगुणों का जानना बहुत ही कठिन है-हम अपने अन्दर जो गुण समझते हैं दूसरे के लिए अवगुण जाने जा सकते हैं-हमारे अन्दर जो अवगुण दूसरों को नजर आते हैं-वह हमारे अपने लिए गुण होते हैं गुण-अवगुण एक दूसरे से Linked हैं

गुण-अवगुण

Both are Linked to each other

यह बातें हैं दिल की-किसी के दिल की बातें कोई नहीं जान सकता-किसी के दिल की गहराइयों तक पहुँचना बहुत ही कठिन है-हमारे दिलों को तो बस राज श्यामा जी ही जान सकते हैं जो हम सबके दिलों के बहुत करीब है।

इतना घोर कलयुग है-हम न चाहते हुए भी कोई न कोई गलती कर बैठते हैं- 'झूठ बोलना पाप है'-लेकिन यहाँ हर इन्सान दिन में बात-बात पर न जाने कितने झूठ बोल जाता है-किसी से फोन पर हम बात करना नहीं चाहत-तो हम कहला देते हैं कह दो हम घर पर नहीं-किसी से हम मिलना नहीं चाहते तो बाहर गेट से ही किसी न किसी बहाने वापस भेज देते हैं। बात-

बात पर हर इन्सान यहाँ झूठ बोल ही पड़ता है, सुबह से रात तक हम कितने झूठ बोल जाते हैं-गिनने बैठें तो हमें अपने ऊपर ही शरम आएगी कि हमने बिना बात पर कितने झूठ बोल डाले। झूठ बोलना ठीक नहीं पर 'किसी में किसी को झूठ बोलने में फायदा हो रहा हो तो झूठ बोलना एक गुण ही कहलायेगा।' कोई किसी को जान से मार डालना चाहता है- हम उसे अपने घर में छुपा लेते हैं-बाहर से ही दुश्मनों को भेज देते हैं कहकर कि कोई नहीं आया इस तरफ झूठ-बोलने से किसी की जान बच जाए तो अच्छा काम ही किया।

ज्यादा सोना ठीक बात नहीं-बस आलस में पड़े रहना बुरी बात है-पर अपने पिया की याद में इस दुनियाँ से बेखबर पड़े रहना-'उसके अपने लिए तो गुण ही है-देखने वालों के लिए अवगुण हो सकता है-इधर-उधर की बातें निंदा, बुराई करने से तो अच्छा है चुपचाप अपने पिया की याद में पड़े रहो भले ही देखने वाले यही कहें सोती बहुत है। यह दुनियाँ बड़ी अजीब है-जो बैठकर T.V. को देखकर अपना वक्त बिताते हैं वह इंसान अच्छे समझे जाते हैं-जो रहते हैं अपनी ही मस्ती में वह बुद्धू-बेवकूफ-बेकार समझे जाते हैं-उनकी इस दुनियाँ में कोई कीमत नहीं खैर नींद में ज्यादा सोना ठीक नहीं पर

नींद न आने में पड़े अपने पिया की याद में रहना-किसी के लिए उतना ही कीमती है जितना वाणी का कीमती होना ।

छिपके साहब कीजे याद,

खासलखास नजीदी स्वाद ।

कहने का तात्पर्य यह है कि किसी के लिए जो गुण होता है वह देखने वालों के लिए अव-गुण हो जाता है-किसी को कुछ कहने से पहले सोचना तो चाहिए-किसी को भी दिल की गहराइयों तक पहुँचना बहुत कठिन है ।

गुस्सा करना बहुत बुरी बात है-जब इंसान को गुस्सा आता है तो वह न जाने क्या-क्या कह बैठता है-जो बातें उसे नहीं कहनी चाहिए वह भी गुस्से में कहकर दूसरों का दिल दुखा बैठते हैं पर अगर गुस्से में हम किसी के भले के लिए डांट बैठते हैं तो हम यह अच्छा हा करते हैं हमारे अपने बच्चे बुरी संगत में पड़ रहे हैं जब तक हम उन्हें गुस्से में डांटेंगे नहीं तो ठीक कैसे होंगे-ज्यादा गुस्सा डांट बच्चों को ढोठ भी बना सकता है । इन्चोली आश्रम में अनुशासन को कायम रखने के लिए थोड़ा बहुत रोब, गुस्सा डांट दिखाना ही पड़ता है-देखने वाले चाहे कुछ भी कहें पर हमारे लिए तो यही गुस्सा गुण है जो हमें वक्त पर उठना, बंठना, बोलना, चलना सिखाता है-जो गुस्सा अवगुण का रूप लेता है वही गुस्सा एक गुण बन जाता है ।

ज्यादा खाना अच्छा नहीं होता-हमें जीने के लिए खाना है-खाने के लिए जीना नहीं,

ज्यादा खाना भी एक अवगुण समझा जाता है पर ज्यादा खाने-पीने को अवगुण जानकर हम अपनी सेहत का ध्यान न रखें तो ठीक नहीं अपनी सेहत का ध्यान रखना, ठीक टाईम खाना अच्छा खाना एक गुण ही है । शरीर है तो जहान है-पैसों का भी क्या करना जब हमारा शरीर ठीक नहीं किसी ने कहा है 'Health is Wealth' खा पीकर वक्त बिता दिया जिन्दगी को यूँ ही तो बंकार किया । खा पीकर वक्त बिताया-सत्संगत कीर्तन-वाणी-में तो अच्छा ही किया ।

कहने वाले कहते हैं इन्चोली में तो बस खाने-पीने के ही प्रोग्राम चलते हैं-खीरें, समोसे, गुलाबजामुन पर जाकर कोई देखे तो सही-रात-रात भर जागकर सुन्दर साथ वाणी का रस लेता है-बूढ़े से बूढ़ा भी आधी रात को जागकर तारतम के पाठ को माला करता है-सत्संग कीर्तन के भा बड़िया से बड़िया प्रोग्राम होते हैं । आत्म को खुराक अच्छी मिलती है तो शरीर को भी खाना अच्छा मिलना ही चाहिए ।

दुनियाँ में हर तरह के लोग पाये जाते हैं-बहुत लोगों के पास पैसे की कमी नहीं होती पर फिर भी दिल से बड़े 'कंजूस' होते हैं ५-५ पैसे के लिए कंजूसी करते हैं । बूँद-बूँद से मटका भर जाता है उसी तरह ५-५ जोड़-जोड़ कर वह हजारों रुपये एकत्र कर लेते हैं-पैसों के लिए कंजूसी करना ठीक नहीं यह एक अवगुण ही है पर कई होते हैं जो घर के खर्चों को ठीक ढंग से चला कंजूसी बरतकर हाथ Tight रखकर पैसे बचा लेते हैं-वही पैसे धर्म की राह पर सेवा में

लगा देते हैं, उनका कंजूसीपन तो एक गुण बन जाता। तन मन धन से जितनी सेवा हमें करनी चाहिए हम नहीं कर पाते।

जिन सुध सेवा की नहीं,
ना कछू समझे बात।

सो काहे को गिनावे आप साथ में,
जिन सुध ना सुपन साख्यात ॥

कहे इन्द्रावती सुन्दरबाई चरने,
सेवा पिउ की प्यार अति घने।

और कछू ना इन सेवा समान,
जो दिल सनकूल करे पहचान ॥

इस दुनियाँ में हमें खुदा मिले या न मिले—कोई गम नहीं—परमधाम में उनका हमारा हमेशा का साथ है—वह हमारे से कभी जुदा नहीं हो सकते—सेवा परमधाम में नहीं मिलनी।

रोना बहुत बुरी बात है—चाहे कितने भी दुःख आएँ, कष्ट आएँ—हमेशा हँसते ही रहना चाहिए पर रोगा अपने हाथ नहीं होता—हँसना रोगा खुदा के हाथ है—कौन अपना मर्जी से रोता है फिर रोने वाले को कोई पसन्द भी नहीं करता न ही रोते को देखकर कोई राजी होते हैं। रोते को देखकर तो गुस्सा हो आता है सबको—रोने वाले का कोई साथ नहीं देता—जिसे दर्द होता है वही जानता है—देखने वाले तो बात बनाकर चल पड़ते हैं। रोगा कई प्रकार का होता है—मोह माया ममता का रोगा अच्छा नहीं—कोई मर जाए तो रोगा अच्छा नहीं। रोगा तो वही अच्छा है जो अपने पिया की याद में रोया—कभी—कभी

अपने पिया की याद में दिल उदास हो जाता है—देखने वालों को भले अच्छा न लगे पर उदास होने वाले के लिए तो गुण ही है—दुनियाँ की तमन्नाओं से दिल उदास हो रोये तो क्या—दिल अपने पिया की ही याद में रोए।

मेरे धनी धाम के दुल्हा,
में कर न सकी पहचान।

सो रोज़ में याद कर कर,
जो मारे हेत के बान ॥

रोये, वह भी छुन कर किसी को पता भी न चले पर दिल है कभी बेवस हो ही जाता है। जो रह होगी अर्श की उसका दिल तो रोएगा ही कि कब खेल खत्म हो—कब यह ब्रह्माण्ड फना हो—कब वह दिन आए जब हम परमधाम जाएँ कब वह दिन आए जब हम अपने पिया से कभी भी जुदा न हों।

ओ खोजे अपने आपको,
और खोजे आपनो घर।

और खोजे अपने खसम को,
और खोजे दिन आखिर ॥

पिकचरें देखना एक बुरी आदत मानी जाती हैं—अब तो घर-घर वीडियो आ गए हैं दिन भर बैठ कर पिकचर देखते हैं। हमें मनुष्य तन मिला है खुदा को याद करने के लिए Mostly अपना वक्त सत्संग कीर्तन वाणी में बिताने के लिए। अगर हम अपना वक्त पिकचर देखने में नष्ट करते हैं तो ठीक नहीं पर कभी कोई अच्छी पिकचर हम देखने बैठ जायें और उस पिकचर की

कहानी से हमें सीख मिलती हो तो उस पिक्चर को देखना हमारे लिए गुण ही है। कई पिक्चरों बहुत ही अच्छी होती हैं। जीवों की कुर्बानो देखकर हमें अपने ऊपर शर्म सी आने लगती है। दुनियाँ के झूठे आशिक मासूक के किस्से देखकर दिल में यही आता है हम क्या कुरबानी कर रहे हैं। धर्म की राह—पर कुछ भी नहीं—हमें माया प्यारी है। पिया से प्यार नहीं।

आगू आशिक ऐसे कहे,
जो माया थे उत्पन्न।
कोटि बेर मासूक पर,
उड़ाए देवें अपना तन ॥

जीव माया के ऐसी करें
क्यों देखे दृष्ट।
ओ भी उन पर यों करें,
तो हम तो हैं ब्रह्मसृष्ट ॥
तो नकल हमारे की नकल,
तिनका होत है हाल।
तो पीछे पाउं हम क्यों देवें,
हम सिर नूर जमाल ॥

यहाँ कर्म भूमि है यहाँ सबको कर्म करना ही पड़ता। कई इन्सान काम करते हैं फिर सारा दिन जताते रहते हैं, हमने यह करा, वह करा ऐसा है वैसा है कई होते हैं चुपचाप काम करते हैं किसी को खबर नहीं वह क्या कुछ कर लेते हैं—कई होते हैं जो काम को ही महत्व देते हैं—सुबह से लेकर रात तक बस काम करने में जुटे

रहते हैं। वह इन्सान से ज्यादा काम को कीमती समझते हैं—उन्हें इन्सान से नहीं उनके काम से प्यार होता है जबकि इन्सान को इन्सान से प्यार होना चाहिए वह भी बिना स्वार्थ का सच्चा प्यार पर बहुत कम लोग हैं—इस दुनियाँ में जो दिल से सबको प्यार करते हैं। हमें जिन्दगी में किसी न किसी के सहारे की जरूरत पड़ती ही है बस किसी का किया भूलना नहीं चाहिए उसका दिल ही दिल में एहसान मन्द होना चाहिए और किसी का कुछ करो तो बस करके भूल जाना चाहिए—हमें तारतम मिला, वाणी मिली वह अखण्ड वाणी जिसके लिए लक्ष्मी जी भी तरसती रहीं, सात कल्पांत तपस्याकी हमें वाणी मिली घर बैठे बिना किसी कष्ट के हमें दी जिसने उसका हमें एहसान मन्द होना चाहिए।

महामत कहे ए मोमनों,
ए देखो हक की मेहर।
जो एक एहसान हक का लीजिये,
तो चौदे तबक लगें जहर ॥

जब हम किसी के करीब होते हैं तो बस अवगुण ही देखते हैं जब वह हमारे से दूर चला जाता है तब उसकी कीमत का पता चलता है। जीते जी कोई किसी के गुण गाकर राजी नहीं। हमें चाहिये कि हम हमेशा सब के गुण ही गाते रहें।

गुन घनी के याद कर,
पकड़ पिउ के पाए।
सुखें बैठ सुखपाल में,
देसी बतन पोहोचाए ॥